दिवाकर चित्रकथा

राजकुमारी चन्दनबाला

अंक ११
मूल्य २१.००

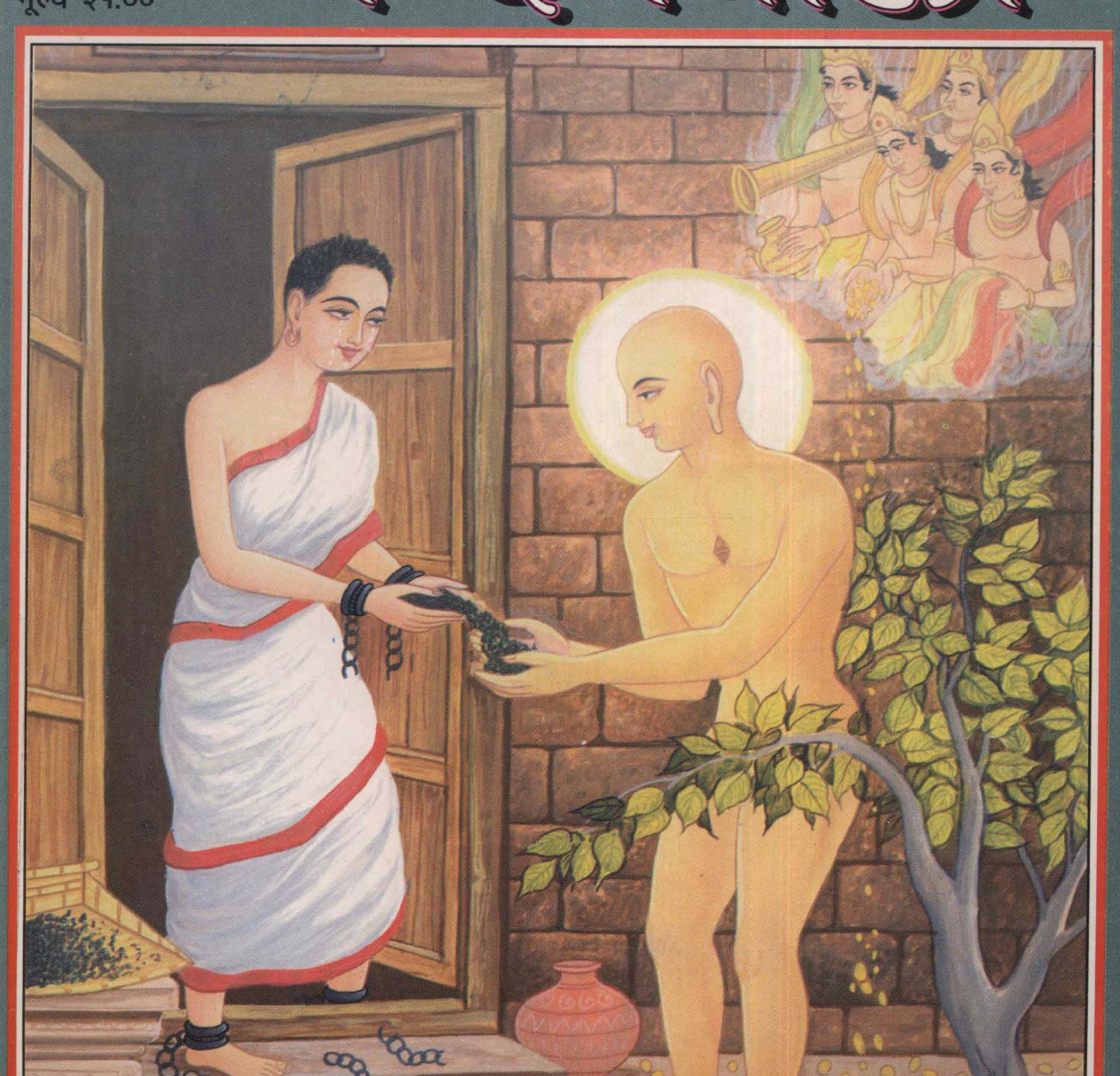

सुसंस्कार निर्माण | विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि | मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमारी चन्दनबाला

मनुष्य जाति के लाखों वर्ष का अनुभव यह बताता है कि ऋतु चक्र की भाँति जीवन में निरन्तर बसन्त और पतझड़ आते रहते हैं। उतार-चढ़ाव और सुख-दुःख छाया की भाँति मनुष्य के साथ लगे हुए हैं। संसार में सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख का क्रम दिन-रात चलता रहा है/चलता रहेगा।

सुख-दुःख व उतार-चढ़ाव के इस चक्र में अपने आपको संतुलित रखकर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने वाला मानव संसार में इतिहास बनाता है और महापुरुषों की श्रेणी में गिना जाता है।

राजकुमारी चन्दनबाला का जीवन उतार-चढ़ाव के चक्र पर घूमते जीवन की विचित्र और रोमांचक गाथा है। उसकी कथा सुनते/पढ़ते ही हृदय द्रवित हो जाता है। आँसुओं से भीगी उसकी जीवन गाथा में आश्चर्य तो यह है कि आँसुओं ने ही उसके जीवन की दिशा बदल दी। जगत् बंधु प्रभु महावीर के दर्शन ने उसके आँसुओं को मोती बनाकर चमका दिया। इतिहास में अजर-अमर बना दिया।

चन्दना का जन्म चम्पा के राज परिवार में हुआ। हँसी-खुशी और आनन्द की बहारों में बचपन बीता, किन्तु यौवन की दहलीज पर चढ़ते-चढ़ते ऐश्वर्य और सुखों के सागर में तैरती राजहंसी एक दिन दुःखों के अथाह दलदल में फँस गई।

चम्पा की राजकुमारी कौशाम्बी के दास बाजार में गुलामों की तरह नीलाम हुई। किसी अनजान अपरिचित घर में गुमनाम रहकर दासी की भाँति सेवा करती रही। ईर्ष्या और कुशंकाओं की कैंची ने उसके केशों को ही नहीं, समूचे जीवन-पट को तार-तार कर रख दिया। हथकड़ी, बेड़ियों में जकड़ी हुई तीन दिन तक भूखी-प्यासी तहखाने में पड़ी रही। कठोर शारीरिक और मानसिक यातनाओं ने उसके धीरज की अग्नि-परीक्षा ली, किन्तु वह हर परिस्थिति में शान्त रही, न तो अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाये और न ही किसी को कोसा। एक सूत्रधार की तरह तटस्थ भाव से वह भाग्य चक्र का खेल देखती रही और एक दिन वह आया, चन्दना के द्वार पर तरण-तारण दीनबंधु भगवान महावीर पधार गये। चन्दना के दुःखों का अन्त हुआ। नारी की प्रचण्ड अस्मिता जागी और दासी बनी राजकुमारी चन्दना भगवान महावीर के सबसे बड़े श्रमणी संघ की नायिका बनकर संसार को नारी जाति के कल्याण का मार्ग बताने लगी। ...र्न

—महोपाध्याय विनय सागर

...चन्द सुराना "सरस"

Serving JinShasan
070326
gyanmandir@kobatirth.org

लेखन : डॉ. साध्वी सरिता जी म.
एम. ए. (डबल), पी–एच. डी.

...ा. साध्वी शुभा जी म.
...म. ए. (डबल), पी–एच. डी.

प्रकाशन प्रबन्धक : संजय सुराना

चित्रण : डॉ. त्रिलोक शर्मा

प्रकाशक

श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. फोन : (0562) 2151165

प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर
13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. दूरभाष : 2524828, 2524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

W 212

राजकुमारी चन्दनबाला

चम्पानगरी के राजा दधिवाहन एवं महारानी धारणी की पुत्री राजकुमारी वसुमती राजभवन के उद्यान में रात को देखे अपने स्वप्न को याद कर चिन्तामग्न बैठी थी।

उसे चिन्तित देख एक दासी महारानी के पास गयी।

महारानी जी! राजकुमारी उद्यान में उदास सी बैठी हैं।

यह सुन महारानी एवं महाराज उद्यान में वसुमती के पास आए।

ARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराज को आते देखकर वसुमती ने खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया। माँ ने पूछा—

बेटी! क्या बात है? तू उदास क्यों बैठी है?

मां, मैंने आज रात के अंतिम प्रहर में एक बड़ा डरावना स्वप्न देखा है।

क्या स्वप्न देखा? बेटी!

पिताजी! मैंने देखा कि चंपा नगरी कष्टों में घिर गयी है। चारों ओर लूट-मार हो रही है।

तभी एक सीमा रक्षक ने उद्यान में आकर सूचना दी—

महाराज! कौशाम्बी की सेना ने हमारे राज्य पर आक्रमण कर दिया है।

समाचार सुनते ही महाराज अत्यन्त चिन्तित हो गये। उन्होंने तुरन्त सेना को युद्ध के लिये तैयार होने का आदेश दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चम्पा की सेना ने डट कर कौशाम्बी की सेना का मुकाबला किया।

किन्तु कौशाम्बी की सेना के आगे टिक न सकी और हार गयी। चंपा के राजा दधिवाहन भी युद्ध में लापता हो गये। कौशाम्बी की सेना ने चम्पा पर अपना कब्जा कर लिया और लूटपाट शुरू कर दी।

एक सैनिक लूट के उद्देश्य से महल में घुस कर घूम रहा था तभी उसकी नजर रानी एवं राजकुमारी वसुमती पर पड़ी। उनकी सुंदरता देख उसका मन डांवाडोल हो गया। उन्हें साथ ले जाने के लिए उसने तुरंत एक बहाना बनाया और वह पास जाकर बोला–

वह दोनों को अपने साथ ले वन की ओर चल दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घने जंगल में पहुँच कर उसने रथ रोका। दोनों को रथ से उतारने के बाद वह महारानी से बोला–

हे सुन्दरी! मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।

ओह ! तुम महाराज के सारथी नहीं हो सकते? कौन हो तुम?

मैं कौशाम्बी का सिपाही हूँ। मैं तुम दोनों को अपने साथ ले जाऊँगा और अपनी पत्नी बनाऊँगा।

सारथी दुर्भावना से महारानी की ओर बढ़ा। उसे बढ़ते देख महारानी ने उसे रोका।

रुक जाओ ! यदि तुमने मुझे हाथ लगाने का प्रयास भी किया तो मैं अपनी जान दे दूंगी ।

सारथी क्रूरता से हंसता हुआ महारानी के साथ जबर्दस्ती करने लगा। तब शील की रक्षा के लिए महारानी ने अपनी जीभ खींच कर प्राण त्याग दिये।

रानी को मरा देख सारथी भौचक्का रह गया। उसकी अंतरात्मा जाग उठी। दुष्कृत्यों पर पश्चात्ताप होने लगा। वह स्वयं को धिक्कारने लगा।

ओह! मैंने एक सती के प्राण ले लिए!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पास खड़ी वसुमती ने सारथी से कहा–

सुनो भाई! तुम्हारी दुष्टता देख मुझे अत्यन्त दुख हुआ है। अपने शील की रक्षा के लिए मैं भी प्राण त्याग रही हूँ।

यह सुनते ही सारथी की आँखों से आँसू उमड़ पड़े।

बेटी ! तुम्हारी माता के बलिदान ने मेरी सोई हुई आत्मा को जगा दिया है। अब मैं ऐसा नीच कार्य नहीं करूँगा। मुझ पर विश्वास करो।

एक क्षण पहले के तुम्हारे राक्षसी रूप को देख मैं कैसे विश्वास करूँ?

ऐसा मत कहो बेटी! मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए सब कुछ कर सकता हूँ।

इतना कहते-कहते सारथी रोने लगा।

वसुमती ने देखा कि सारथी पश्चात्ताप की आग में जल रहा है। तब वह बोली–

आप रोएं नहीं। यदि आप मुझे बेटी मानेंगे तो मैं अपने प्राण नहीं त्यागूँगी।

यह सुन सारथी को धैर्य बंधा। उसने वसुमती को अपनी पुत्री बना लिया और स्वयं उसका धर्म पिता बन गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके बाद उन्होंने जंगल से सूखी लकड़ियां इकट्ठी कर महारानी का अंतिम संस्कार किया।

सारथी वसुमती को लेकर रथ में सवार हो अपने घर कौशाम्बी की ओर चल दिया। रास्ते में वसुमती ने सारथी से कहा–

सारथी जैसे ही अपने घर पहुँचा उसकी पत्नी बाहर आई। उसने वसुमती को अपने पति के साथ देखा तो कहा–

इतना सुनते ही सारथी की पत्नी गुस्से से फट पड़ी–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह चिल्लाकर बोली–

मुझे बेटी नहीं, धन चाहिए। तुम इस छोकरी को बेचकर मुझे एक लाख सौनेया लाकर दो। वर्ना...

क्या कहा? पुत्री को बेच दूँ!

सारथी और उसकी पत्नी घर के बाहर ही झगड़ने लगे।

दोनों को झगड़ते देख वसुमती सारथी से बोली–

पिता जी। आप माता की इच्छा पूरी कीजिए। मुझे बेच दें।

फिर वसुमती सारथी की पत्नी की ओर मुड़कर बोली–

माता जी! मुझे क्षमा करें मैंने आपका दिल दुखाया है।

इसके बाद वसुमती ने सारथी से कहा–

चलिए पिताजी! देर न करें।

सारथी वसुमती को लेकर दुःखी मन से चल दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारथी राजकुमारी वसुमती को लेकर दास बाजार में पहुँचा जहाँ गुलामों की खरीद-बिक्री होती थी। एक चबूतरे पर खड़ा होकर उसकी बोली लगाने लगा–

तभी एक अधेड़ धनाढ्य महिला पालकी में वहाँ आई। वसुमती के अद्भुत रूप को देखकर वह मुग्ध हो गई।

वसुमती ने उससे पूछा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसुमती ने कहा–

बस! बस! मैं समझ गयी। मैं आपके साथ नहीं जाऊँगी। जिस इच्छा से आप मुझे खरीद रही हैं वह कार्य मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकती।

मैं पूरी कीमत देकर तुझे खरीद रही हूँ। तू मेरी गुलाम है।

वह स्त्री नगर नायिका (वेश्या) थी।

वह भीड़ से बोली–

आप लोगों के सामने मैं इसका पूरा मूल्य दे कर खरीद रही हूँ। नियमानुसार इसे मेरे साथ जाना ही पड़ेगा।

हाँ। हाँ। यह ठीक कह रही है।

वह जबरदस्ती अपने दास दासियों की सहायता से वसुमती को ले जाने लगी।

चलो! ले चलो इसे...

हे प्रभु! मेरे शीलधर्म की रक्षा करो। णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं .....

वसुमती आँखें बंद कर णमोकार मन्त्र का स्मरण करने लगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तभी अचानक चारों ओर से बंदरों ने नगर नायिका के सेवकों पर हमला कर दिया। वे घुर्र-घुर्र कर उन पर झपट पड़े। कुछ बंदर नगर नायिका को बुरी तरह काटने लगे। चारों ओर भगदड़ मच गयी। जिसे जहाँ जगह मिली भागा।

नगर नायिका बुरी तरह चीख रही थी। उसकी दुर्दशा देख वसुमती से रहा न गया। वह बंदरों को डांटते हुए बोली–

बंदर जैसे वसुमती की भाषा समझ गये। वे तुरन्त भाग गये।

वसुमती ने नगर नायिक को आगे बढ़कर सहारा दिया। उसके स्पर्श से ही नगर नायिका की आधी पीड़ा कम हो गयी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इतना सुनते ही नगर नायिका की आँखों से आँसू लुढ़क पड़े। वह बोली–

मुझे क्षमा कर दे बेटी ! तू तो नारी नहीं, कोई देवी है? धिक्कार है मेरे जीवन को! आज तक मैंने पाप ही पाप किये हैं। आज से सदाचार का पालन करूँगी।

वसुमती ने कहा–

दुःखी न होइए माताजी! जब आँख खुले तभी सबेरा है।

वसुमती ने उसे सदाचार का महत्व समझाया। नगर नायिका अपनी दासियों के साथ वापिस चली गयी।

माताजी ! प्रभु ने आपको सद्‌बुद्धि दी है, धन्य है।

चबूतरे पर केवल सारथी और वसुमती रह गये। सारथी फिर से बोली-लगाने लगा। तभी उधर से नगर श्रेष्ठी सेठ धनावाह निकले। वे बड़े सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। वसुमती को देख उनके मन में वात्सल्य उमड़ पड़ा। उन्होंने वसुमती से पूछा–

बेटी ! तुम तो भले घर की लगती हो, यहाँ क्या कर रही हो?

सेठजी ! मैं यहाँ बिकने के लिये आई हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेष्ठी धनावाह को यह सुनकर बड़ा दुख हुआ। उसने मन ही मन वसुमती को उस दास बाजार से मुक्ति दिलाने का निश्चय कर लिया। वह बोला—

बेटी, तेरे बेचने वाले ने कितनी सौनेया मांगी हैं।

एक लाख सौनेया

कोई बात नहीं। मैं दूँगा। तू मेरे घर पर चल।

वसुमती को सेठ सज्जन पुरुष लगे। किन्तु उसने फिर भी पूछ लिया।

सेठ जी! आप मुझसे किस प्रकार का काम लेंगे?

पुत्री! मैं वीतराग भगवान का उपासक हूँ। सदाचार मेरे घर का शृंगार है। मेरे घर के द्वार पर आया कोई अतिथि खाली न लौटे यही काम तुम्हें करना है।

वसुमती सेठ के उत्तर से संतुष्ट होकर उसके साथ चलने को तैयार हो गई।

लो भाई तुम्हारी एक लाख सोनैया; आज से यह मेरी बेटी है।

सेठजी ने सारथी को एक लाख सौनेया दे विदा किया और वसुमती को अपने साथ ले गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठ जी अपने घर पहुँचे। वहाँ सेठानी मूला ने जब सेठ जी को एक रूपवती स्त्री के साथ रथ से उतरते देखा तो वह चौंक गयी। उसने सेठ से प्रश्न किया—

यह लड़की कौन है? आप इसे अपने साथ क्यों लाये हैं।

प्रिये! संतान न हो तो घर कितना सूना लगता है? आज मैं तुम्हारे लिए पुत्री लाया हूँ। यह लक्ष्मी रूपकन्या हमारे यहाँ खुशियाँ बरसाएगी।

वसुमती ने आगे बढ़कर सेठानी मूला को प्रणाम किया। मूला ने अनमने मन से उसे आशीर्वाद दिया।

वसुमती ने शीघ्र ही अपनी चतुरता, सेवाभाव एवं मधुर व्यवहार से सेठ धनावाह एवं घर के सभी दास-दासियों का दिल जीत लिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठजी वसुमती की कार्यकुशलता से बहुत प्रभावित हुए। एक दिन उन्होंने वसुमती से पूछा–

बेटी! तुझे यहाँ आए इतने दिन हो गये किन्तु मैं तेरा परिचय न जान सका। तेरा नाम क्या है?

वसुमती ने कुछ देर सोच कर कहा–

पिताजी ! मेरे दो नाम हैं। माता-पिता मुझे वसुमति कहते थे तथा नाना चंदनबाला। आप चाहें जिस नाम से पुकार सकते हैं।

सेठ जी बोले–

बेटी ! तेरा स्वभाव चंदन के समान शीतल है अतः मैं तेरा नाम चंदनबाला ही लूँगा।

नाम सुन वसुमती अपने नाना की स्मृति में खो गयी। उसे विचार मग्न देख सेठजी ने कहा–

किस विचार में पड़ गयी बेटी?

विचार में नहीं पिताजी। मैं अतीत की मधुर स्मृतियों में खो गयी थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसुमती ने सेठ जी से कहा—

पिताजी ! इस नाम से मुझे प्रेरणा मिलती रहेगी।

कैसी प्रेरणा बेटी!

यही कि, कैसी भी विषम परिस्थिति हो, कितने भी संकट आए चन्दन के समान शीतल-शान्त बने रहो।

तू धन्य है बेटी। जो नाम में भी गुण खोज लेती है।

उस दिन के बाद सभी लोग वसुमति को चन्दनबाला के नाम से पुकारने लगे।

चंदनबाला अतिथियों का विशेष सत्कार करती। शेष समय धार्मिक आराधना में मग्न रहती थी। धीरे-धीरे चारों ओर उसकी कीर्ति फैलने लगी।

इतनी अल्पायु में ऐसी धार्मिकता एवं विवेक सराहनीय है।

यह किसी बड़े खानदान की लगती है।

चन्दनाबाला की बढ़ती कीर्ति से सेठानी जल-भुन गई।

यह सभी को अपने वश में कर लेगी और एक दिन इस घर की स्वामिनी बन बैठेगी तब मेरी दुर्दशा कर देगी।

इस काँटे को साफ करना चाहिए।

वह चन्दनाबाला को नीचा दिखाने के लिये कोई योजना सोचने लगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन धनावाह सेठ थके हारे बाहर से आये। आते ही उन्होंने चन्दनबाला को आवाज लगाई।

बेटी चंदना ! पाँव धोने के लिये पानी तो लाना।

आवाज सुनकर चंदनबाला तुरन्त एक लोटे में पानी लेकर आई।

लाइये पिताजी ! मैं आपके पाँव धो दूँ।

चंदनबाला सेवा भाव से सेठ के पैर धोने लगी। उसके बाल खुलकर मुँह पर आ गये। सेठ वात्सल्य पूर्वक मुँह पर से बाल हटाने लगा। तभी सेठानी मूला वहाँ से गुजरी उसने यह दृश्य देखकर गलत अर्थ लगाया।

ओह ! तो यह प्रेमलीला चल रही है।

इस पापिनी ने सेठ जी पर अपने रूप का जाल डाल दिया है। मुझे तुरन्त ही कोई उपाय करना पड़ेगा...वरना यह शीघ्र ही इस घर की मालकिन बन जायेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब सेठानी चंदनबाला के काम में कमियाँ निकालने लगी। दान करने पर भी उसे डाँटने लगी।

कल तो घर में इतना आटा था? कहाँ गया सब?

भिक्षुकों को दे दिया माताजी।

हाँ! हाँ क्यों नहीं? पराया माल जो है। खूब लुटा। दान पुण्य के बहाने घर लुटा रही है। कौड़ी-कौड़ी को मोहताज कर देगी एक दिन।

माताजी! आगे से ध्यान रखूँगी। अब कोई भूल नही होगी।

अपना दोष न होते हुए भी चंदनबाला ने क्षमा माँग ली।

एक बूढ़ी दासी से यह न देखा गया। वह सेठानी से बोली–

सेठानी जी! वह आपकी कितनी सेवा करती है। फिर भी आप उसी पर क्रोध करती रहती हैं।

तू मूर्ख है। अभी तक समझ नहीं पायी.....इसने सेठजी पर डोरे डाल रखे हैं।

क्षमा कीजिए सेठानी जी! सेठजी और चंदना धार्मिक प्रवृत्ति वाले पवित्र विचार के हैं। आप यह बुरे विचार अपनी मलिन बुद्धि से निकाल दीजिए।

मुझे अक्ल सिखाती है। मेरी बुद्धि को मलिन कहती है। जा! निकल जा यहाँ से।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठानी की डांट खाकर दासी वहाँ से चली गयी। सेठानी सोचने लगी–

अब तो दासियाँ भी चंदना की तरफदारी करने लगी हैं। मुझे तुरन्त कोई उपाय करना होगा।

वह सोचते हुए अपने कक्ष में पहुँची। तभी सेठजी ने आकर सेठानी से कहा–

प्रिये! मुझे दूसरे नगर जाना है। कल सुबह ही निकल जाऊँगा।

कब लौटेंगे? स्वामी?

तीन दिन तो लग ही जाएँगे। व्यापारिक कार्य है।

अगले दिन प्रातः उठते ही चंदना ने सेठजी के लिए भोजन तैयार कर दिया। ब्रह्ममुहूर्त्त में सेठ ने प्रस्थान किया।

हूँ...अब देखती हूँ इसको....

पिताजी ! आप जल्दी आना मेरी दाँयीं आँख फड़क रही है। प्रभु कृपा से आपकी यात्रा मंगलमय हो।

सेठजी के जाने के बाद सेठानी ने अंदर आकर सभी नौकरों से कहा–

तुम लोग अवकाश माँग रहे थे न... अभी यहाँ कोई विशेष काम भी नहीं है अपने अपने घर हो आओ।

सेठानी ने सब दास-दासियों को छुट्टी दे दी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर वह सीधे चंदनबाला के कक्ष में गयी और कड़े स्वर में उससे बोली–

शैतान लड़की! बता तू कौन है? तेरे माता-पिता कौन हैं?

माताजी! आज आप कैसे प्रश्न कर रही हैं?

सेठानी ने कहा–

मेरी बात का तू साफ-साफ उत्तर देती है या नहीं....

माताजी! मैं आपकी पुत्री हूँ और आप मेरी माता हैं। मुझ पर शक न करें।

सेठानी यह उत्तर सुनकर सन्तुष्ट नहीं हुई।

शक की बात करती है ठगिनि। तूने मेरे पति को ठग लिया। अपने जाल में फंसा लिया। मैं तुझे खूब पहचान गयी हूँ।

माताजी! हम पिता पुत्री के पवित्र संबंधों पर कीचड़ न उछालें।

इतना सुनते ही सेठानी का क्रोध भड़क गया। वह बोली–

मैंने अपनी आँखों से मेरे स्वामी को तेरे बाल सहलाते हुए देखा है। बोल! क्या यह सच नहीं?

माताजी ! सच यह है कि मैं पिताजी के चरण धो रही थी उस समय मेरे केश खुले थे और बार-बार मुख पर आने से पैर धोने में बाधा आ रही थी। पिताजी ने मेरी परेशानी देख केश पकड़कर पीछे कर दिये थे।

किन्तु सेठानी को उसकी बात पर विश्वास न हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसने चंदनबाला को दंड देने की ठान ली। वह दूसरे कमरे में जाकर कैंची उठा लाई और बोली–

तेरे इन केशों को मेरे पति ने संवारा है न। मैं इन्हें काट दूँगी। फिर देखती हूँ कैसे रीझते हैं वह इन पर।

चंदनबाला ने सहज भाव से कहा–

माताजी! आपको जिस बात से भी प्रसन्नता मिले आप वही करें। मैं तैयार हूँ।

इस उत्तर से सेठानी बुरी तरह चिढ़ गई। उसने चंदना के बाल काटने शुरु कर दिये। चंदना शांत भाव से बाल कटाते हुए सोचने लगी–

यदि इनको इसमें ही यह सुख मिलता है तो मेरा सौभाग्य है।

केश काटने के पश्चात् सेठानी ने व्यंग्य से कहा–

जा! अब तेरे सिर पर केश ही नहीं रहे।

माताजी! मैं तो खुश हूँ कि मेरे केश काटने से आपको संतोष मिला।

सेठानी को ऐसे उत्तर की आशा न थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसने इसे चंदनबाला की ढिठाई समझा वह सीधी अंदर गयी और दो भारी-भारी सांकले और ताले ले आई और क्रूरता से हँसते हुए बोली–

अब मैं तुझे इन सांकलों में बाँधकर तहखाने में डाल दूँगी तब मुझे शांति मिलेगी।

उसने चंदना के हाथ-पैर सांखलों से बाँध दिये।

और उसे घसीटकर तहखाने की सीढ़ियों पर धकेल दिया और गुस्से से बोली–

जा! अब यहीं तेरी समाधि बनेगी।

फिर ऊपर आकर तहखाने के द्वार पर ताला लगा दिया

अब किसी को पता भी नहीं चलेगा कि यह कहाँ गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके बाद कमरे में वापस आकर वह सोचने लगी–

मैंने इसे तलघर में डाल तो दिया है पर यदि लोग इसके विषय में पूछेंगे तो मैं क्या कहूँगी?

काफी सोचने पर भी कोई बहाना न सूझा तो सेठानी ने निर्णय लिया–

मैं अपने पीहर चली जाती हूँ। न मैं यहाँ रहूँगी न कोई पूछेगा।

यह विचार कर वह तुरन्त अपने पीहर चली गयी।

इधर अपने साधना काल के बारहवें वर्ष में भगवान महावीर अपने आत्म कल्याण के साथ प्राणियों के कल्याण का भी चिन्तन कर रहे थे। भगवान् स्त्री जाति को दास प्रथा से मुक्त कराना चाहते थे इसी भावना से उन्होंने एक असम्भव सा लगने वाला अभिग्रह किया।

मैं उसी कन्या के हाथों अन्न-जल ग्रहण करूँगा जो पवित्र जीवन जीने वाली राजकुमारी हो, बाजार में बिकी हुई हो, उसके हाथों में हथकड़ियाँ हों पाँवों में बेड़ियाँ हों, सिर मुंडा हो, तीन दिन की भूखी-प्यासी हो, कारागृह में बन्द रह चुकी हो, घर की देहली पर बैठी हो, एक पाँव देहली के अन्दर दूसरा बाहर हो, हाथ में सूप हो, सूप में उड़द के बाकले रखें हों, मुख पर हर्ष के भाव हों, लेकिन आँखों में आँसू हों। अभिग्रह की सब बातें मिलने पर ही अन्न ग्रहण करूँगा अन्यथा छह माह तक तप करूँगा।

● अभिग्रह किसी को बताया नहीं जाता यदि निमित्त मिल जाए और पूरा हो जाए तो ठीक अन्यथा साधक प्रतिज्ञा से विचलित नहीं होता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान अभिग्रह ग्रहण करके अनेक ग्राम-नगरों में विहार करने लगे। भक्तगण भिक्षा देने के लिए उत्सुक रहते। भांति-भांति के पदार्थ लेने की प्रार्थना करते। किन्तु प्रभु बिना कुछ लिये ही आगे बढ़ जाते।

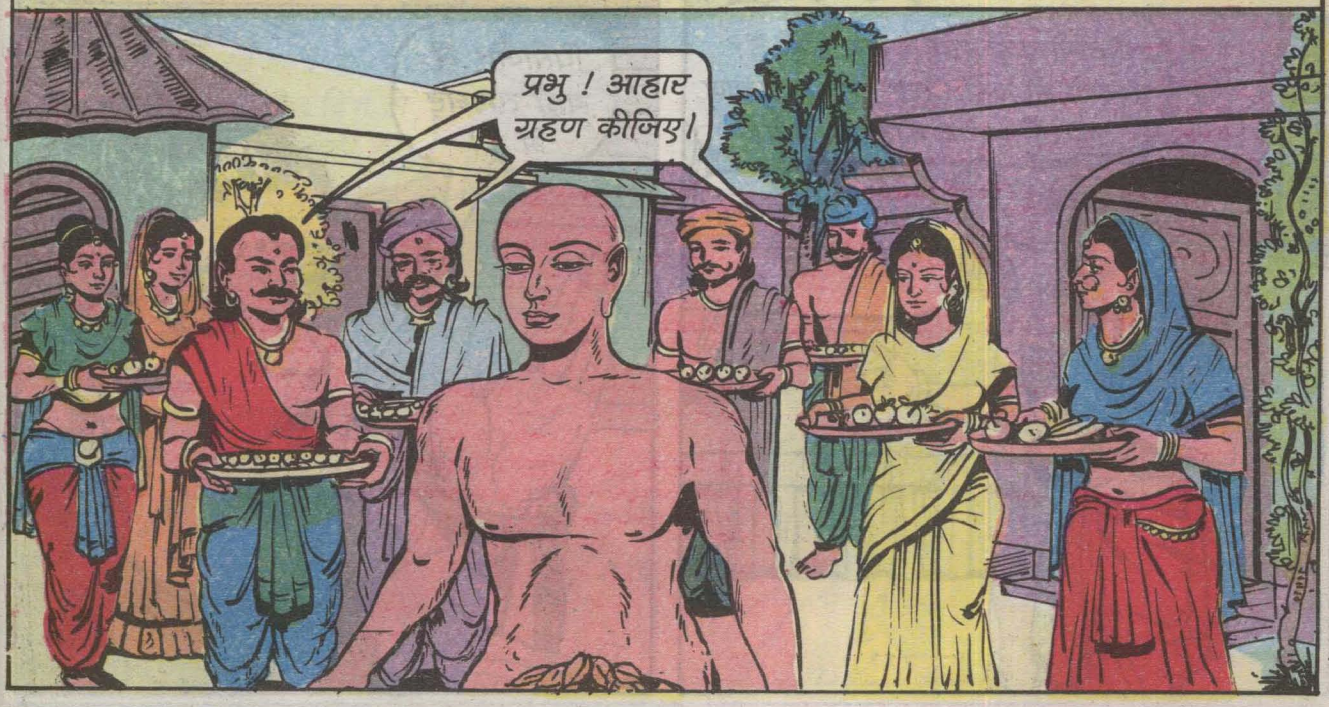

भगवान विहार करते हुए कौशांबी नगरी में आ गये। वहाँ भी उन्होंने भिक्षा ग्रहण नहीं की। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि प्रभु क्या लेंगे। इस तरह विहार करते-करते उन्हें पाँच माह पच्चीस दिन हो गये।

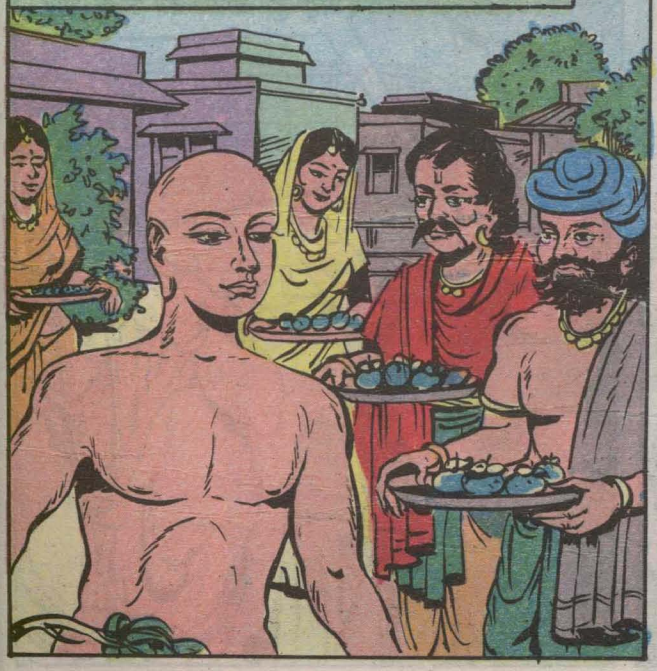

इधर नगरवासी प्रभु के अभिग्रह को जानने के लिए चिंतित थे। उधर चंदनबाला तलघर में बंधी आत्म- चिंतन कर रही थी। वह सोच रही थी–

इस तरह नवकार मंत्र का स्मरण करते और कर्मफल पर विचार करते हुए तीन दिन गुजर गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथे दिन धनावह सेठ वापिस आए। घर सूना देख वे चिंतित हो गये–

सेठानी कहाँ गयी? सब कहाँ हैं? चन्दना भी नहीं दीख रही ? आवाज लगाऊँ शायद कोई आ जाये।

चंदना! बेटी चंदना! कहाँ हो तुम ?

सेठ जी की आवाज तलघर में बन्द चंदनबाला के कानों में पड़ी। उसने वापस आवाज दी।

पिताजी! मैं यहाँ तलघर में हूँ।

आवाज सुनते ही सेठजी ने तलघर का दरवाजा खोल कर चंदना को अंधकार से बाहर निकाला। उसकी दुर्दशा देख धनावह सेठ की आँखों में आँसू आ गये।

जरूर उस अत्याचारिनी मूला की करतूत है तुझे जान से मारने के लिए तेरी यह दुर्दशा कर दी।

चंदना ने सेठजी को समझाया–

नहीं-नहीं पिताजी! माताजी को दोष न दें। यह सब मेरे ही कर्मों का दोष था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठ जी चन्दनबाला को सहारा देकर ऊपर ले आये। चन्दनबाला ने कहा–

पिताजी, बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दीजिये। तीन दिन से अन्न, जल देखा तक नहीं है।

सेठ जी उठे। उन्होंने देखा रसोईघर पर ताला लगा है। तभी उन्हें जानवरों के खाने के उड़द के बाकुले दीखे। बाकुलों के लिए बर्तन न मिलने पर वहीं टँगे सूप में बाकुलों को रखकर चन्दनबाला के पास आये।

बेटी ये उड़द के सूखे बाकुले ही इस समय घर में पड़े हैं। तू इनसे अपनी भूख मिटा। तब तक मैं लुहार को बुलाकर लाता हूँ।

यह कहकर वह चले गये।

चन्दना के मन में भावना उठी–

क्या बिना अतिथि को दिये खाना उचित होगा? मैं द्वार पर जाकर किसी अतिथि की प्रतीक्षा करती हूँ।

भूख-प्यास से दुर्बल हुई, जंजीरों में जकड़ी हुई काया को किसी प्रकार घसीटती हुई वह द्वार तक पहुँची। देहली पर पहुँचते-पहुँचते वह इतना थक गई कि एक ही पाँव बाहर रख सकी। दूसरा पाँव अन्दर रखकर वह उसी स्थिति में अतिथि के इन्तजार में बैठ गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन का दूसरा प्रहर था। भगवान महावीर आहार गवेषणा हेतु निकले हुए थे। उन्हें देखते ही चंदना हर्ष विभोर हो गयी। सोचने लगी–

भगवान महावीर ने चंदनबाला को देखा और पाया कि उनके अभिग्रह की सब बातें मिल रही हैं सिर्फ आँखों में आंसूओं की कमी है। अपूर्णता देख प्रभु वापिस लौटे। प्रभु का लौटना था कि चंदना की आँखों से आँसू बहने लगे।

सच्ची पुकार से भगवान महावीर के पांव वापिस मुड़े। चंदनबाला पुनः हर्ष से भर गयी। आँखों से आँसू बह रहे थे। मुख पर हर्ष था। भगवान के अभिग्रह की सब बातें पूर्ण हो चुकी थीं। वे चंदनबाला की ओर बढ़े।

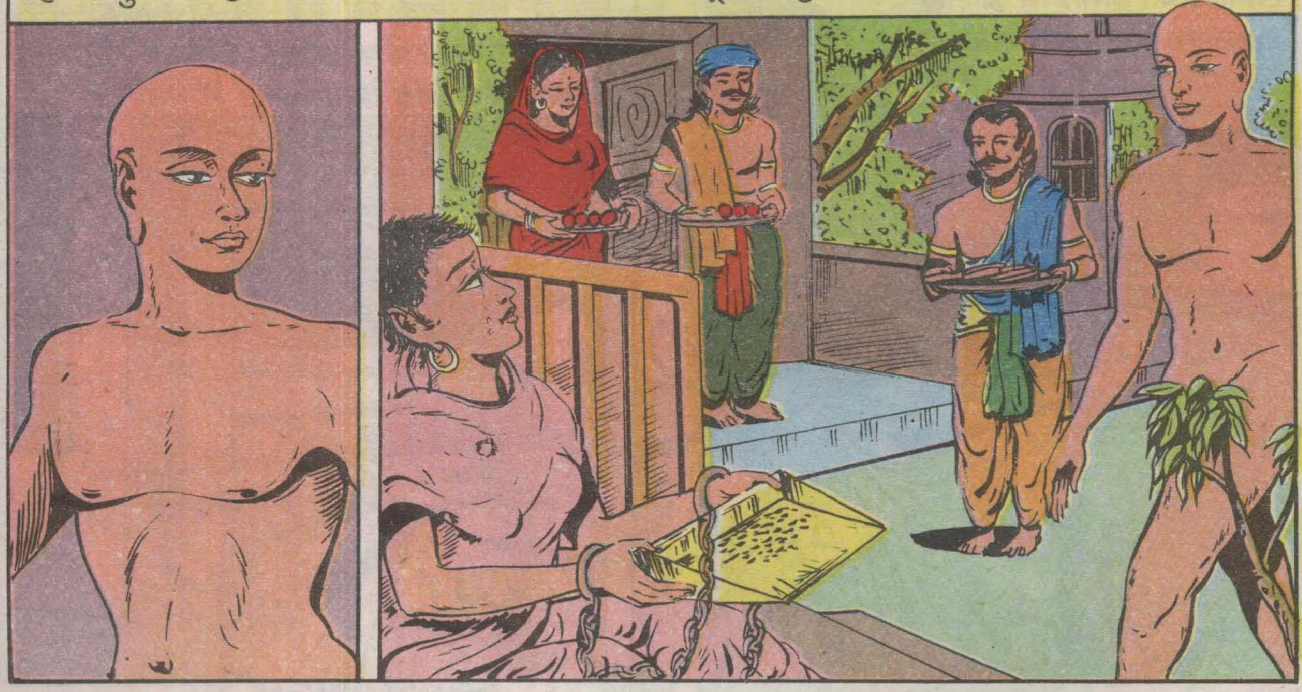

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हर्ष वेग में भरकर चंदनबाला ने प्रभु के कर-पात्र में सारे बाकुले डाल दिये। प्रभु के आहार ग्रहण करते ही चंदना की बेड़ियाँ-हथकड़ियाँ स्वतः ही टूट कर गिर गयीं। आकाश से देव दुन्दुभि बजने लगी। अहोदानं-अहोदानं का दिव्य स्वर गूंज उठा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस महादान की महिमा करने के लिए देवराज इन्द्र अपने देव परिवार के साथ धरा पर आये। उनकी दिव्य शक्ति के प्रभाव से राजकुमारी चन्दनबाला का सौन्दर्य पहले से भी अधिक निखर उठा। देवराज ने चन्दनबाला का अभिवादन किया–

राजकुमारी ! आप अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं। आपके हाथों आज एक महान तपस्वी के दीर्घ तप का पारणा हुआ है। हम आपके इस महादान का अभिनन्दन करते हैं।

चन्दनबाला हर्ष विभोर होकर बोली–

आज मेरे जीवन का सर्वोत्तम दिन है। सचमुच प्रभु दीनबन्धु हैं। जिन्होंने मुझ पर इतनी कृपा की है।

देवराज की आज्ञा से देवताओं ने स्वर्ण सिंहासन बनाकर चन्दनबाला को उस पर बिठाया और दान की महिमा गाने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इधर जैसे ही सेठानी मूला को यह समाचार ज्ञात हुआ उसे अपने किये पर पश्चात्ताप होने लगा। वह सोचने लगी–

धिक्कार है मुझ पर! जो ऐसी महासती को मैंने घोर कष्ट दिये! मुझे उससे क्षमा मांगनी चाहिये।

वह तुरन्त अपने घर वापस आयी और चंदनबाला से क्षमा माँगने लगी। चंदनबाला ने कहा–

माताजी! मैं तो आपकी ऋणी रहूँगी। आपकी कृपा से ही तो मुझे भगवान के दर्शन हुए। आप ही के कारण मुझे भगवान का अभिग्रह पूर्ण करने का अवसर मिला।

बेटी! तू सचमुच चंदन समान है।

फिर सेठानी ने अपने पति से क्षमा माँगी–

स्वामी! मुझे क्षमा कर दो। मैंने बहुत पाप किये हैं। मैं अपने किये पर पछताती हूँ।

सेठानी !अब चंदना की तरह तुम भी सच्चे मन से धर्म का पालन करो।

भगवान के अभिग्रह पूर्ण होने की खबर राजमहल तक पहुँच गयी। महाराज शतानीक को जैसे ही समाचार मिला वे प्रसन्न हो उठे और तुरन्त महारानी मृगावती को ले नगर श्रेष्ठी सेठ धनावह के घर की ओर चल दिये।

महारानी ! अपने नगर सेठ धनावह की बेटी कितनी भाग्य शालिनी है, जिसके हाथों भगवान महावीर का अभिग्रह पूर्ण हुआ.....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवकों ने राजा के लिये मार्ग बनाया। वे चंदनबाला के निकट पहुँचे। तभी भीड़ में से किसी ने कहा–

अरे! यह चंदनबाला तो चंपा नरेश राजा दधिवाहन की पुत्री वसुमति है।

जैसे ही ये शब्द रानी मृगावती ने सुने उसने ध्यान से चंदनबाला को देखा। फिर मुड़कर राजा शतानीक से बोली–

स्वामी! यह तो मेरी बहन धारणी की पुत्री है।

स्वामी! आपको चंपा पर चढ़ाई करने से कितना रोका था मैंने! किन्तु आप न माने। देखा आपकी चंपा की लूट का परिणाम कितना भयंकर हुआ। मेरी बहन की पुत्री को कितने कष्ट उठाने पड़े।

यह सुनकर राजा को बहुत दुःख हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा ने चंदनबाला से क्षमा मांगते हुए कहा–

चंदनबाला ने साथ जाने से इंकार कर दिया। राजा-रानी के बहुत आग्रह करने पर चंदनबाला बोली–

यह सुनकर सेठ की आंखें नम हो गईं। वह भावुक स्वर में बोला–

राजा ने धनावह सेठ से चन्दनबाला को अपने साथ ले जाने के लिये निवेदन किया। धनावह सेठ ने चन्दनबाला को समझाकर राजा शतानीक के साथ भेज दिया।

रानी मृगावती और राजा शतानीक चन्दनबाला को अपने साथ ले आये। चन्दना के कहने पर राजा दधिवाहन की खोज की गई परन्तु कहीं पता नहीं चला। चन्दनबाला भगवान महावीर के तीर्थ प्रवर्त्तन की प्रतीक्षा कर रही थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन रानी मृगावती की दासी ने आकर शुभ सूचना दी–

राजकुमारी सुना आपने ? भगवान महावीर को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। पावापुरी के उद्यान में भगवान का समवसरण लगा है।

मेरी मनोभावना पूर्ण होने का समय आ गया है। अब मैं शीघ्र ही प्रभु के चरणों में पहुँचकर दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन सफल बना लूँ.....

तभी दो देवता विमान लेकर उपस्थित हुए–

राजकुमारी ! आपकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए देवराज इन्द्र ने विमान भेजा है। चलिये पावापुरी में भगवान महावीर का समवसरण लगा है।

हर्ष में भाव-विभोर होकर चन्दनबाला विमान में बैठकर भगवान महावीर के समवसरण में पहुँची।

प्रभु मैं आपके चरणों में आई हूँ मुझे दीक्षा प्रदान कर मेरा उद्धार कीजिये।

इस समवसरण में चन्दनबाला सहित सैंकडों महिलाओं तथा इन्द्रभूति आदि अनेक विद्वानों ने प्रभु के चरणों में दीक्षा ग्रहण की। भगवान ने चार तीर्थ की स्थापना की। चन्दनबाला भगवान महावीर के श्रमणी संघ की नायिका बनी और संसार को नारी जाति के कल्याण का मार्ग दिखाया।

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बात आपसे भी.....

सम्माननीय बन्धु,

सादर जय जिनेन्द्र !

जैन साहित्य में संसार की श्रेष्ठ कहानियों का अक्षय भण्डार भरा है। नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर, शिक्षाप्रद, रोचक कहानियों में से चुन-चुनकर सरल भाषा-शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा प्रयास हमने गत चार वर्षों से प्रारम्भ किया है।

अब यह चित्रकथा अपने छटवें वर्ष में पदापर्ण करने जा रही है।

इन चित्रकथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही जैन इतिहास संस्कृति, धर्म, दर्शन और जैन जीवन मूल्यों से भी आपका सीधा सम्पर्क होगा।

हमें विश्वास है कि इस तरह की चित्रकथायें आप निरन्तर प्राप्त करना चाहेंगे। अतः आप इस पत्र के साथ छपे सदस्यता पत्र पर अपना पूरा नाम, पता साफ-साफ लिखकर भेज दें।

आप इसके तीन वर्षीय (33 पुस्तकें), पाँच वर्षीय (55 पुस्तकें) व दस वर्षीय (108 पुस्तकें) सदस्य बन सकते हैं।

आप पीछे छपा फार्म भरकर भेज दें। फार्म व ड्राफ्ट/एम. ओ. प्राप्त होते ही हम आपको रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा अब तक छपे अंक तुरन्त भेज देंगे तथा शेष अंक (आपकी सदस्यता के अनुसार) जैसे-जैसे प्रकाशित होते जायेंगे, डाक द्वारा हम आपको भेजते रहेंगे।

धन्यवाद !

आपका

नोट–वार्षिक सदस्यता फार्म पीछे है।

संजय सुराना

प्रबन्ध सम्पादक

SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002 PH. : 0562-2151165

हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सचित्र भावपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य
सचित्र भक्तामर स्तोत्र	325.00	सचित्र ज्ञातासूत्र (भाग-1,2)	1,000.00	भक्तामर स्तोत्र (जेबी गुटका)	20.00
सचित्र णमोकार महामंत्र	125.00	सचित्र दशवैकालिक सूत्र	500.00	सचित्र मंगल माला	20.00
सचित्र तीर्थंकर चरित्र	200.00	सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र	500.00	सचित्र भावना आनुपूर्वी	21.00
सचित्र कल्पसूत्र	500.00	सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र	500.00	सचित्र पार्श्वकल्याण कल्पतरू	30.00

चित्रपट एवं यंत्र चित्र

सर्वसिद्धिदायक णमोकार मंत्र चित्र	25.00	श्री गौतम शलाका यंत्र चित्र	15.00
भक्तामर स्तोत्र यंत्र चित्र	25.00	श्री सर्वतोभद्र तिजय पहुत्त यंत्र चित्र	10.00
श्री वर्द्धमान शलाका यंत्र चित्र	15.00	श्री घंटाकरण यंत्र चित्र	25.00
श्री सिद्धिचक्र यंत्र चित्र	20.00	श्री ऋषिमण्डल यंत्र चित्र	20.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वार्षिक सदस्यता फार्म

मान्यवर,

मैं आपके द्वारा प्रकाशित चित्रकथा का सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे निम्नलिखित वर्षों के लिए सदस्यता प्रदान करें।

(कृपया बॉक्स पर ☑ का निशान लगायें)

			सदस्यता शुल्क	डाकखर्च	कुल राशि
☐	तीन वर्ष के लिये	अंक 34 से 66 तक (33 पुस्तकें)	540/-	100	640
☐	पाँच वर्ष के लिये	अंक 12 से 66 तक (55 पुस्तकें)	900/-	150	1,50
☐	दस वर्ष के लिये	अंक 1 से 108 तक (108 पुस्तकें)	1,800/-	400	2,200

मैं शुल्क की राशि एम. ओ./ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूँ। मुझे नियमित चित्रकथा भेजने का कष्ट करें।

नाम (Name) (in capital letters) _____

पता (Address) _____

_____

_____ पिन (Pin) _____

M.O./D.D. No. _____ Bank _____ Amount _____

हस्ताक्षर (Sign.) _____

नोट—
- यदि आपको अंक 1 से चित्रकथायें मंगानी हो तो कृपया इस लाईन के सामने हस्ताक्षर करें .....
- कृपया चैक के साथ 25/- रुपये अधिक जोड़कर भेजें।
- पिन कोड अवश्य लिखें।
- तीन तथा पाँच वर्षीय सदस्य को उनकी सदस्यतानुसार प्रकाशित अंक एकसाथ भेजे जायेंगे।

चैक/ड्राफ्ट/एम.ओ. निम्न पते पर भेजें—

SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-2151165

दिवाकर चित्रकथा की प्रमुख कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धि निधान अभय कुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10 करुणा निधान भ. महावीर (भाग-1, 2)
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्ध चक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजना सुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया (प्रत्येक बुद्ध)
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरी
24. वचन का तीर
25. अजात शत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार (अन्त मति सो गति)
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का जाल
31. पाँच रत्न
32. अमृत पुरुष गौतम
33. आर्य सुधर्मा
34. पुणिया श्रावक
35. छोटी-सी बात
36. भरत चक्रवर्ती
37. सद्दाल पुत्र
38. रूप का गर्व
39. उदयन और वासवदत्ता
40. कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य
41. कुमारपाल और हेमचन्द्राचार्य
42. दादा गुरुदेव जिनकुशल सूरी
43. श्रीमद् राजचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Phone : (079) 23276252, 23276204-05

एक सौ आठ हाथी

तर्कों से तो तथ्य का, लगता कब अन्दाज।
दंग रहे नृप देखकर, अष्टोत्तर गजराज।।

जोधपुर दरबार, मानसिंह ने कहा—"जैन लोग कहते हैं, पानी की एक बूँद में अनगिनत जीव हैं, यह कैसे हो सकता है ?"

इसके उत्तर में मुनि जीतमलजी ने एक कागज का टुकड़ा, चने की दाल जितना लिया। उसमें एक सौ आठ हाथियों के चित्र बनाये, जो कि अम्बारी सहित अलग-अलग बहुत ही अच्छे ढंग से बनाये गये थे। वह अद्‌भुत चित्र दरबार को ले जाकर दिखाया। बात का भेद खोलते हुए मुनिजी ने कहा—"मैं कोई चित्रकला का पारंगत नहीं हूँ। जब मैंने एक सौ आठ हाथी बनाये हैं, बहुत सम्भव है कोई मेरे से अधिक कुशल एक सौ आठ की जगह एक हजार आठ भी बना सकता है। भला जब कृत्रिम चीज बनी हुई चीज ऐसे बन सकती है, तब प्राकृतिक के विषय में अविश्वास जैसी चीज ही क्या है ?"

सारे सभासद मुनिजी को, शतशत साधुवाद देते हुए गुनगुना रहे थे—

चिणा जितरी दाल में, नहीं कुछ बाधरु घाट।
शंका हुवै तो देखल्यो, हाथी एक सौ आठ।।

□□

क्या डॉ. सा. झूठ बोलते हैं ?

सन्नारी हो जिस जगह, घर है स्वर्ग समान।
ऐसी कुलटा से रखें सदा दूर भगवान।।

एक सेठ की पत्नी सूर्पणखा की बहिन-सी थी। इसी घरेलू चिन्ता से सेठजी की चिता की राह पकड़ने जैसी स्थिति हो गई। उन्हें बहुत बीमार सुनकर एक निकट का सम्बन्धी एक अच्छे से डॉक्टर को ले आया। सेठजी के होश-हवास प्रायः लुप्त थे। डॉक्टर ने देखकर कहा—"यह तो मर गया।"

पास खड़ी सेठानी तो यह चाहती ही थी कि कब यह मरे। पर सेठ ने जब डॉक्टर का कथन सुना तो अपने हाथ की अंगुली हिलाकर संकेत किया कि "मैं मरा नहीं।"

सेठानी यह देखकर सेठजी को झिड़कती-सी बोली—"क्या इतने बड़े डॉक्टर झूठ बोलते हैं ? यह कहते हैं कि मर गया, तो आप मर ही गये। बोलो मत, चुप रहो। थोड़ी बहुत भी शर्म नहीं आती। इतना तो सोचना चाहिए कि ये बिचारे डॉक्टर क्यों झूठ बोलेंगे।"

तुम कहते मैं ना मरा, पर कुछ करो विचार।
डॉक्टरजी क्या बोलते, झूठ अरे बदकार।।

□□

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 1100.00 रुपया। 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य : 640.00 रुपया।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : 20/-

१. क्षमादान
२. भगवान ऋषभदेव
३. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
४. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
५. भगवान महावीर की बोध कथायें
६. बुद्धिनिधान अभयकुमार
७. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
८. किस्मत का धनी धन्ना
९-१०. करुणानिधान भगवान महावीर
११. राजकुमारी चन्दनबाला
१२. सती मदनरेखा
१३. सिद्धचक्र का चमत्कार
१४. मेघकुमार की आत्मकथा
१५. युवायोगी जम्बुकुमार
१६. राजकुमार श्रेणिक
१७. भगवान मल्लीनाथ
१८. महासती अंजनासुन्दरी
१९. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
२०. भगवान नेमिनाथ
२१. भाग्य का खेल
२२. करकण्डू जाग गया
२३. जगत् गुरु हीरविजय सूरि
२४. वचन का तीर
२५. अजातशत्रु कूणिक
२६. पिंजरे का पंछी
२७. धरती पर स्वर्ग
२८. नन्द मणिकार
२९. कर भला हो भला
३०. तृष्णा का फल
३१. पाँच रत्न

चित्रकथाएँ मँगाने के लिए अंदर दिये गये सदस्यता फॉर्म को भरकर भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org